अध्याय

25

12147CH25

विकास-कार्यक्रमों का प्रबंधन

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद शिक्षार्थी—

- विकास की संकल्पना तथा विकास प्रक्रिया में व्यक्तियों की भागीदारी के महत्त्व को जान सकेंगे,
- कार्यक्रम विकास तथा मूल्यांकन की संकल्पना को समझ सकेंगे,
- कार्यक्रम विकास तथा मूल्यांकन के व्यावसायिकों के लिए अपेक्षित कौशलों को जान सकेंगे।

प्रस्तावना

भारत आज विकास के क्षेत्र में अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इस तथ्य के बावजूद कि भारत ने हाल के वर्षों में तीव्र आर्थिक संवृद्धि प्राप्त की है, 456 मिलियन भारतीय गरीबी रेखा के नीचे रह रहे हैं, जो कि संसार के गरीबों का लगभग एक तिहाई भाग है। सतत विकास लक्ष्य के अंतर्गत भारत के सामने प्रस्तुत चुनौतियों के उत्तर में अनेक विकास कार्यक्रमों का प्रावधान किया गया है। समय के साथ, जैसे-जैसे परिस्थितियाँ तथा संसाधनों की उपलब्धता बदली और नयी समस्याएँ तथा वास्तविकताएँ उभरीं विकास कार्यक्रमों द्वारा उनकी चुनौतियों का सामना करने के लिए नयी कार्यप्रणालियाँ तथा कार्यनीतियाँ विकसित करके उचित समाधान करने का प्रयास किया गया है।

महत्त्व

संचार एवं विस्तार विषय में, समुदायों, परिवारों तथा व्यक्तियों द्वारा सामना की जाने वाली विकास की चुनौतियों का उत्तर देने के लिए विस्तारित कार्यक्रमों के द्वारा विकास को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है।

© NCERT not to be republished

मूलभूत संकल्पनाएँ

विकास-कार्यक्रम — विकास मनुष्य की क्षमताओं, विकल्पों तथा अवसरों को बढ़ावा देने की वह प्रक्रिया है, जिससे वह दीर्घ, स्वस्थ तथा परिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकें। इस प्रक्रिया में मनुष्य के सामर्थ्य तथा कौशलों का प्रसार सम्मिलित है, जिससे वे अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाले कारकों तक पहुँच सकें और उन पर नियंत्रण कर सकें। विकास का लक्ष्य मनुष्यों द्वारा उनकी क्षमताओं तथा संसाधनों का पूर्णरूप उपयोग करना होता है।

सतत विकास लक्ष्य क्या हैं? सतत विकास लक्ष्य सतत समयबद्ध विस्तृत विकास लक्ष्य हैं, जिन्हें प्राप्त करने के लिए पूरे संसार की सहमति है। ये आठ लक्ष्य विभिन्न रूपों में विद्यमान अतिनिर्धनता का मुकाबला करने के लिए ठोस मंच प्रदान करते हैं। सन् 2015 में संसार के नेताओं द्वारा अपनाए गए तथा 2030 तक प्राप्त करने के निश्चय के साथ ये लक्ष्य प्रत्येक देश की विशिष्ट विकास आवश्यकताओं के अनुरूप ढले हुए वैश्विक तथा स्थानीय दोनों रूपों में हैं। ये संपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को समान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मिलजुल कर काम करने के लिए एक ऐसा ढाँचा प्रदान करते हैं, जिससे कि सुनिश्चित हो सके कि मानव विकास सभी स्थानों पर प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँच जाए।

विकास-कार्यक्रम दी गई परिस्थितियों को बदलने के लिए सुविचारित प्रयासों पर केंद्रित है। अधिकतर इसके अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम कार्यनीतियों तथा क्रियाकलापों का विकास और साथ ही इन प्रयासों के लक्ष्य-वर्ग के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को समझना है।

कार्यक्रम मूल्यांकन — कार्यक्रम मूल्यांकन एक प्रक्रिया है, जिसका उपयोग रूपरेखा तथा प्रस्तुति-क्षेत्र के प्रभावी होने तथा लक्ष्य किस सीमा तक प्राप्त हो पाया है, उसे ज्ञात करने में किया जाता है। कार्यक्रम मूल्यांकन क्रियाकलापों का कार्यक्षेत्र भिन्न-भिन्न हो सकता है। इसे किसी विशिष्ट कार्यशाला के लिए छोटे पैमाने पर प्रयुक्त किया जा सकता है, किसी विस्तृत समुदाय या किसी देश या राज्य के कार्यक्रम के लिए बड़े पैमाने पर प्रयुक्त किया जा सकता है।

विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाते समय अधिकांश कार्यक्रमों में निम्न तीन घटकों में से एक या अधिक होते हैं यथा— विकासात्मक, संस्थागत, तथा सूचनात्मक, जो किए जाने वाले क्रियाकलापों के केंद्र बिंदु तथा दृष्टिकोण को दिशानिर्देशित करते हैं। विकासात्मक घटक में ऐसे क्रियाकलाप होते हैं, जिनका केंद्र बिंदु मुख्य रूप से बनाए जाने वाले अंतःक्षेत्रों की संकल्पना तैयार करना होता है। संस्थागत घटक में कार्यक्रम के क्रियान्वयन में कार्यक्रम से जुड़े, विभिन्न व्यक्तियों की भूमिका की क्षमता का निर्माण सम्मिलित है। सूचनात्मक घटक में विभिन्न संचार चैनलों का उपयोग करके विभिन्न पणधारियों को कार्यक्रम से संबंधित महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करने का प्रयत्न करता है।

आजकल विकास-कार्यक्रम को लोकतांत्रिक क्रियाकलाप की भाँति देखा जाता है, जिसमें कार्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन के बारे में बातचीत और सहमति नीचे दर्शाए अनुसार आवश्यक है —

- मुख्य समस्याएँ, आवश्यकताएँ और अपेक्षाएँ क्या हैं?
- समस्याओं के हल के क्या विकल्प हैं?
- किस प्रकार के संसाधन, सूचनाएँ तथा प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता है?

© NCERT not to be republished

- किस प्रकार की परियोजनाओं तथा क्रियाकलापों को कार्यान्वित किया जाना चाहिए—कब, कैसे, कहाँ, कौन करें?
- मूल्यांकन को किस प्रकार किया जाना चाहिए? इसे कौन करे और कब करे?
- कार्यक्रम का प्रबंधन और नियंत्रण कौन और कैसे करे?

विकास-कार्यक्रम एवं मूल्यांकन में जनसाधारण की सहभागिता—विकास-कार्यक्रम एवं मूल्यांकन को आजकल एक प्रक्रिया तथा सामाजिक कार्य-व्यवहार की भाँति जाना जाता है। कार्यक्रमों के लोकतांत्रिक विकास के लिए समाज के विभिन्न पणधारियों की भागीदारी आवश्यक है। इसमें जेंडर प्रभावी वर्गों तथा हाशिए पर बैठे वर्गों के संबंध में पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए। समाज के विभिन्न वर्गों से आए व्यक्तियों को किसी आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक जोखिम के बगैर अपने विचारों को प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

व्यक्तियों के साथ कार्यक्रम बनाने का अर्थ है व्यक्तियों से सम्मिलित होने के विषय में व्यापक दृष्टिकोण अपनाना। भूतकाल में भागीदारी का अर्थ था सूचना सभाओं में व्यक्तियों की यदा-कदा उपस्थिति, सार्वजनिक सेवाओं का सामान्य उपयोग, किसी परियोजना के लिए (श्रम, धन आदि का) स्वैच्छिक सहयोग या पूर्वनियोजित अधोमुखी परियोजनाओं में सहयोग बढ़ाने के लिए किसी प्रकार का क्रियाकलाप। तथापि, आधुनिक संदर्भ में भागीदारी का अर्थ है, विचार प्रक्रिया तथा व्यवहार में व्यक्तियों की सहभागिता, कार्यक्रम के प्रारंभ से अंत तक कार्यान्वयन में निर्णय लेने के अधिकार सहित सक्रिय भाग लेने की प्रक्रिया और संसाधनों तथा संस्थाओं तक पहुँच तथा नियंत्रण। इसके अतिरिक्त, स्थानीय व्यक्तियों तथा विकास कार्यक्रमों में उनकी भूमिका को नए सिरे से देखना होगा, जबकि इससे पहले के कार्यक्रम आयोजक पितृसत्तावादी थे तथा स्वयं को उत्कृष्ट समझते थे और यह मानते थे कि कार्यक्रम की समस्याओं के बारे में वे ही सबसे अच्छी प्रकार से जानते हैं और उनके पास ही सही उत्तर हैं।

पणधारियों की भागीदारी—विकास कार्यकर्ताओं ने अधिकाधिक यह अनुभव किया है कि विकास कार्यक्रमों की सफलता और उनसे संधारणीय परिणाम प्राप्त करने के लिए उनमें पणधारियों की भागीदारी का स्वरूप और स्तर एक प्राथमिक आवश्यकता है।

पणधारी कौन हैं?

- पणधारी (*स्टेकहोल्डर*) वे व्यक्ति हैं, जिनका किसी कार्यक्रम में निश्चित हित है और वे किसी न किसी रूप में इससे जुड़े हुए हैं।
- प्राथमिक पणधारी वे व्यक्ति हैं, जो प्रत्यक्ष रीति से या अंततोगत्वा कार्यक्रम से प्रभावित होते हैं। द्वितीयक पणधारी बिचौलियों के रूप में होते हैं जैसे – कार्यान्वित करने वाली संस्थाएँ, या अन्य व्यक्ति, समूह, संगठन और अंतःक्षेप में शामिल दानदाता।
- विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न पणधारियों को अपने लिए आवश्यक विविध संसाधनों को जुटाकर एक साथ कार्य करने की आवश्यकता है।

© NCERT not to be republished

पणधारियों की भागीदारी के अनेक लाभों की पहचान की गई है, जो इन्हें विकास कार्यक्रमों का एक आवश्यक साधन बनाते हैं—

- मूलभूत सेवाओं को प्रभावी ढंग से जुटाना-पणधारियों की सहभागिता से स्वास्थ्य शिक्षा, जल आदि की व्यवस्था करने के लिए प्रभावी तंत्र विकसित होता है, जो लागत-प्रभावी और समावेशी होता है, जिसके कारण विशेषतः वंचित समुदाय, उनका लाभ कम कीमत पर उठा सकते हैं। उदाहरण के लिए ग्राम स्वस्थ, स्वच्छता और पोषक समितियाँ (VHSNCs) राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत बनाई गई हैं ताकि ग्रामीण स्तर पर स्थानीय लोग अपनी प्राथमिकता पर निर्णय ले सकें। राजस्थान के गाँवों की उत्तराखंड के गाँवों से अलग ज़रूरतें हो सकती हैं। इसीलिए प्रत्येक गाँवों के VHSNCs अपने स्वयं के कार्यों की योजना बनाते हैं। जिसके लिए स्थानीय पंचायतों को वितरित किया जाता है।
- नीति बनाने में सहभागिता—नीति बनाने के क्रियाकलापों जैसे – अनुसंधान, स्थानीय शासन के कार्यक्रम, जन-सुनवाई तथा बजट बनाने आदि में भाग लेने से विभिन्न पणधारियों—विशेष रूप से सामान्य नागरिकों की सम्मति भी नीति बनाने के प्रक्रम में प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार अधिक जन-अनुक्रियाशील नीतियों तथा कार्यक्रमों को विकसित किया जा सकता है।
- लक्ष्य की ओर प्रगति का अनुवीक्षण—भागीदारी होने से विभिन्न पणधारी कार्यक्रमों के क्रियाकलापों के प्रत्यक्ष अनुवीक्षण में भाग लेने तथा उनके प्रभावी नियमन करने मे समर्थ हो जाते हैं।
- चिंतन तथा अधिगम को सुसाध्य बनाना—भागीदारी से विभिन्न पणधारी समूहों के बीच विवेचनात्मक सोच-विचार तथा अधिगम के लिए बातचीत के अवसर उत्पन्न होते हैं, जो कि विकास कार्यक्रमों या परियोजनाओं का एक मूल तत्व हैं।

विकास-कार्यक्रम चक्र

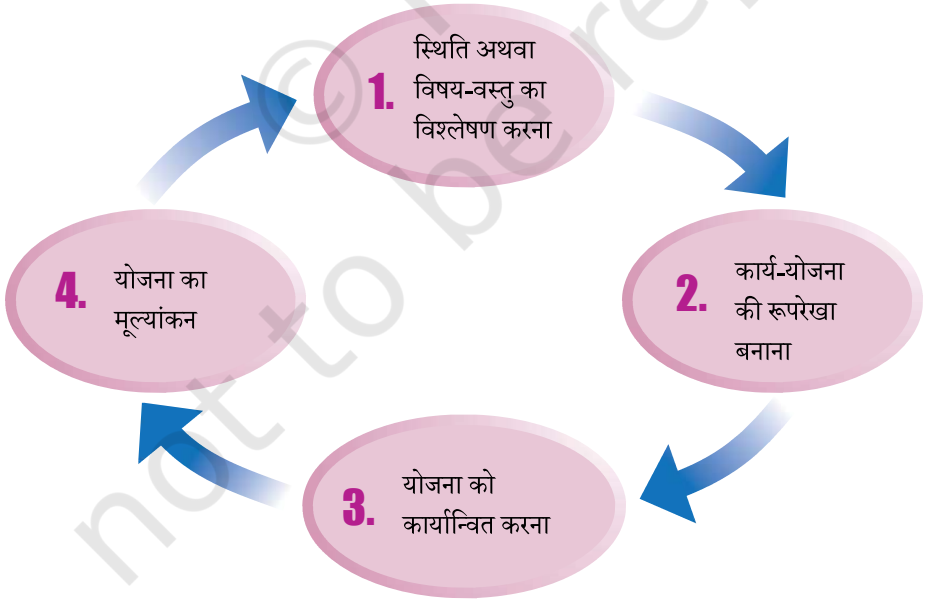

चित्र 25.1 — विकास कार्यक्रम चक्र

© NCERT not to be republished

1. स्थिति अथवा संदर्भ का विश्लेषण — इस चरण में विकास-समस्या को समझा तथा परिभाषित कर लिया जाता है। इसमें विभिन्न पणधारियों को शामिल करने से यह मुख्य मुद्दों के प्रति बहुआयामी अंतर्दृष्टि और संपूर्ण समझ प्रदान कर सकता है। तथ्यों को निष्पक्ष रूप से एकत्र करने में उचित साधनों एवं विधियों का उपयोग किया जाना चाहिए। समस्या को पूर्णतया समझने के लिए विकास समस्या से संबंधित पिछले अनुभवों तथा समुदाय तथा व्यक्तिगत ज्ञान तथा अभिवृत्तियों को समझना, प्रचलित मानदंड एवं कार्य व्यवहार तथा समाज-अर्थशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के बारे में अन्य सूचनाएँ जानने का प्रयास अवश्य करना चाहिए।

   कार्यक्रम विकास के इस चरण का एक अन्य महत्वपूर्ण, मुख्य पहलू मुद्दों के बारे में आपसी संवाद से विभिन्न पणधारियों के बीच आपसी समझ के लिए क्रियाविधि विकसित करना है। इससे विषय की आवश्यकताओं, समस्याओं, जोखिमों और उनके समाधानों के विषय में केवल समझ ही नहीं अपितु प्रत्यक्ष ज्ञान के समाधान, मुद्दों की प्राथमिकताओं के बारे में सामंजस्य विकसित होगा तथा कार्यक्रम के जिन लक्ष्यों पर वे सहमत हैं उनके हलों को परिभाषित करने में सहायता प्राप्त होगी।

2. कार्ययोजना का अभिकल्पन — इस अवस्था में कार्यक्रम के लक्ष्यों या उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जो कार्यनीति अपनाई जाएगी और जिन क्रियाकलापों को करना आवश्यक है उन्हें निश्चित किया जाएगा। योजना का सफलतापूर्वक अभिकल्पन उद्देश्यों को स्पष्ट तथा परिभाषित करने से प्रारंभ होता है। उदाहरण के लिए गाँवों में स्वच्छ भारत अभियान लागू करने के लिए इन सभी कारकों पर चर्चा महत्वपूर्ण है, ताकि सभी लोग दिल से भाग ले सकें और शौचालय का निर्माण करने और खुले में शौच न जाकर शौचालय के प्रयोग के लिए अपना व्यवहार बदलें। लोगों के निर्देशन के लिए निगरानी कमेटी बनाई जाती हैं। यदि लक्ष्य या उद्देश्य स्थूल तथा अस्पष्ट हों तो उन्हें उचित रूप से नहीं समझा जाता और वे कार्यक्रम की असफलता का मुख्य कारण बन सकते हैं। उद्देश्यों को सुसाध्य तथा मापन-योग्य विधि से परिभाषित करने के लिए पथप्रदर्शक का कार्य करने के लिए होशियार (स्मार्ट)अर्थात् सुस्पष्ट मापन-योग्य, प्राप्य, यथार्थवादी तथा समयोचित सूत्र को अपनाया जा सकता है।

   इस चरण का एक दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष ऐसे संबद्ध व्यक्तियों, समूहों तथा संस्थाओं की पहचान करना है, जिनके साथ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तथा स्थिति में सुधार के लिए सहभागिता की आवश्यकता है, क्योंकि कार्यक्रम के प्रति व्यक्तियों तथा समूहों का अभिप्रेरण तथा प्रतिबद्धता अलग-अलग हो सकती हैं, अतः भागीदारी विकसित करना, सक्रिय सहभागिता तथा सभी साझेदारों का सहयोग ऐसी चुनौती है जिस पर विचार करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम की कार्यनीति विकसित करते समय इसकी अपेक्षाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना और उनके मूल्यांकन तथा मापन पर विचार करना आवश्यक है।

© NCERT not to be republished

क्रियाकलाप 25.1

कार्ययोजना के अभिकल्पन को जानने के लिए निम्नलिखित केस अध्ययन को पढ़िए—

दसघरा गाँव के लोग पानी की भारी कमी का सामना कर रहे थे। गाँव के लोगों ने इस समस्या का हल करने के लिए एक कार्यक्रम विकसित करने का निश्चय किया। कार्यक्रम की देख-रेख करने के लिए एक समिति बनाई गई। समिति के सदस्यों में स्थानीय नेता, सरकारी अफ़सर, गाँव के स्वयं-सहायता दल तथा युवा क्लब नेता तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के कार्यकर्ता सम्मिलित थे। समस्या के हल के लिए निश्चित किए गए कार्यक्रम में परंपरागत जल संग्रहण के लिए निर्मित संरचनाओं का पुनरुद्धार, गाँव के कुओं की सफ़ाई तथा उनके उपयोग को नियंत्रित करना, तथा साथ ही क्षेत्र के जलस्तर को ऊँचा लाने के लिए अधिक पेड़ों को लगाना शामिल था। युवा क्लब के सदस्यों ने तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने वृक्षारोपण अभियान की ज़िम्मेदारी ले ली। स्वयं सहायता दल के सदस्यों तथा स्थानीय नेताओं ने स्वेच्छा से कुओं की सफ़ाई तथा उनके उपयोग की एक कार्यप्रणाली विकसित एवं लागू करने की ज़िम्मेदारी ली।

विद्यमान सरकारी योजना के अंतर्गत सरकारी अफ़सरों से गाँव में परंपरागत जल संग्रहण के लिए निर्मित संरचनाओं के पुनरुद्धार में तेज़ी लाने के लिए अनुरोध किया गया।

चर्चा कीजिए—

- गाँव की जल समस्या को हल करने के लिए साझेदारी में सहयोग देने वाले कौन थे?
- विभिन्न व्यक्तियों तथा समूहों को बाँटे गए कार्यों तथा उनकी भूमिका पर टिप्पणी कीजिए।

3. योजना को कार्यान्वित करना—एक बार कार्यक्रम योजना के विकसित हो जाने के पश्चात् सभी संगत क्रियाकलापों के प्रबंधन तथा अनुवीक्षण के लिए तथा आगे बढ़ने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि कार्य योजना बनाई जाए। सारणी 25.1 में कार्य योजना विकसित करने की एक विधि की विशिष्टताएँ दर्शायी गई हैं। इनका उद्देश्य झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वाले फारी समुदाय के 16-18 वर्ष के युवकों को, जो विद्यालय में नहीं पढ़ते हैं, एच.आई.वी. तथा एड्स के बारे में जानकारी देना है।

सारणी 25.1 — कार्य योजना का ढाँचा

श्रोतागण/पणधारी	आवश्यक क्रियाकलाप	आवश्यक संसाधन	ज़िम्मेदार पार्टी	समय-सीमा	संकेतक
विद्यालय-बाह्य युवक (आयु 16-18 वर्ष)	नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति, पोस्टर तथा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	नुक्कड़ नाटकों का मंचन तथा प्रस्तुति, पोस्टरों के डिज़ाइन, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए धनराशि	स्थानीय नेहरू युवा केंद्र	प्रारंभ होने से 6 महीने तक। दिसंबर तक समाप्त।	जागरूकता के स्तर को ज्ञात करने के लिए ज्ञान परीक्षण

4. योजना का मूल्यांकन—योजनाबद्ध कार्यक्रम का मूल्यांकन उसका अंतिम चरण है और यह कार्यक्रम-चक्र को पूरा करता है। सरल शब्दों में मूल्यांकन एक ऐसी समयबद्ध प्रक्रिया है, जो सुव्यवस्थित रूप तथा वस्तुनिष्ठ दृष्टि से, पूरे हो चुके तथा चल रहे कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं की संगतता की

© NCERT not to be republished

सफलता तथा निष्पादन को निर्धारित करने का प्रयत्न है। यह कार्यक्रम, परियोजना या शिक्षण-सामग्री के गुण-दोषों को पहचानने तथा समझने में सहायता करता है। मूल्यांकन के प्रति विभिन्न पणधारियों की अभिवृत्ति तथा सक्रिय भागीदारी कार्यक्रम के हानि-लाभों को वस्तुनिष्ठ तरीके से समझने की प्रक्रिया तथा क्षमता को प्रभावित कर सकती है। यदि इसे सीखने तथा सुधार लाने की भावना से किया जाए तो यह वर्तमान तथा भावी कार्यक्रमों में सुधार करने तथा उन्हें कारगर बनाने का मूल्यवान साधन हो सकता है। अधिकांश स्थितियों में मूल्यांकन परियोजना या कार्यक्रम के अंत में किया जाता है या करने की योजना बनाई जाती है, जबकि वास्तविकता में इसकी योजना परियोजना के प्रारंभ में ही शुरू होनी चाहिए।

मूल्यांकन कार्यक्रम चक्र के किस चरण पर किया जाता है, इसके आधार पर इसे मोटे तौर पर रचनात्मक या संकलनात्मक मूल्यांकन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

रचनात्मक/अनुवीक्षण मूल्यांकन—इसका केंद्र बिंदु कार्यक्रम सुधार, रूपांतर तथा प्रबंधन के लिए सूचना पर होता है। यह परियोजना विकास के साथ प्रारंभ होता है और परियोजना के समाप्त होने तक लगातार चलता रहता है। इसका उद्देश्य है किए जाने वाले क्रियाकलापों का मूल्यांकन करना तथा परियोजना का अनुवीक्षण तथा इसमें सुधार करना।

संकलनात्मक/प्रभाव मूल्यांकन—यह परियोजना की समाप्ति पर इसके निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के मूल्यांकन के लिए होता है। यह परिणामों तथा उसे प्राप्त करने से संबंधित प्रक्रियाओं, कार्यनीतियों तथा क्रियाकलापों के बारे में सूचना एकत्रित करता है। यह महत्त्व या गुण का मूल्यनिर्धारण है।

कार्यक्रम की प्रगति तथा इसके प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले प्राचल स्पष्ट रूप से परिभाषित तथा मापन योग्य होते हैं। कार्यक्रम संकेतकों का निर्धारण योजना बनाने के स्तर पर ही कर लेना चाहिए। प्रोग्राम निवेशों के संकेतक विशिष्ट संसाधनों को मापते हैं, जो परियोजना या प्रोग्राम को पूरा करने में काम आते हैं (उदाहरण के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए नियत की गई धन की वार्षिक राशि)। निर्गत के सूचकों द्वारा प्रोग्राम द्वारा प्राप्त किए गए तात्कालिक परिणामों को मापा जाता है । (उदाहरण के लिए उन दर्शकों की संख्या जिन्होंने प्रोग्राम को देखा या जिनसे मिले अथवा प्रशिक्षित किए गए कर्मचारियों की संख्या ।) यदि सूचक प्रारंभ से ही परिभाषित, निर्धारित तथा वैधीकृत नहीं है तो किसी भी मूल्यांकन प्रक्रिया से अभिक्रम के प्रभाव को मापा नहीं जा सकेगा।

आवश्यक ज्ञान एवं कौशल

विकास-कार्यक्रम तथा मूल्यांकन संचार एवं विस्तार विषय के मूल क्षेत्र की भाँति इसके व्यवसायियों से नयी भूमिकाओं की अपेक्षा रखता है जैसे – विकास कार्यक्रमों के मूल्यांकन, कार्यक्रम योजनाकार, प्रबंधक, कार्यान्वयनकर्ता आदि। इन भूमिकाओं में, विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान तथा कौशल की माँग होती है, जिसमें डिज़ाइन करने, बजट बनाने, आँकड़े एकत्र करने के तरीकों तथा आँकड़ों के विश्लेषण तथा प्रस्तुतीकरण में उसी ज्ञान और कौशल की आवश्कता होती है। तथापि नए दृष्टिकोण में विशेष रूप से राजनीतिक तथा नैतिक क्षेत्र में, अतिरिक्त कौशल तथा तैयारी की आवश्यकता है।

© NCERT not to be republished

- राजनीतिक क्षेत्र में, विस्तार कार्मिक में संस्थागत संदर्भ और सत्ता ढाँचे (औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों में) का विश्लेषण करने में अपनी वार्ता की क्षमताओं को सुधार करने का कौशल होना चाहिए। इसमें संप्रेषण (विशेष रूप से श्रवण) तथा विभिन्न व्यक्तियों तथा संस्थाओं के साथ काम करते हुए आपसी विश्वास विकसित करना तथा क्षमताएँ गठन करना सम्मिलित है।
- नैतिक क्षेत्र में, विस्तार तथा संचार से जुड़े रहने के साथ-साथ कार्यक्रम से संबंधित दूसरे पक्ष के हितों, मूल्यों तथा प्रतिबद्धता के मूल्यांकन की क्षमता भी होनी चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि प्रोत्साहित करने के लिए किस प्रकार के परिवर्तनों पर विचार करें और किस प्रकार के प्रतिकूल प्रभावों से बचा जाए।

इसके अतिरिक्त, रचनात्मक एवं प्रभावी कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए सभी संबंधित पणधारियों एवं सहभागियों के सहयोग तथा एकजुट कार्य करने की क्षमता को सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार संचार एवं विस्तार के सभी व्यवसायियों के द्वारा सामना की जाने वाली मुख्य चुनौती यह है कि वे निश्चित रूप से 'के लिए योजना' की अपेक्षा 'के साथ मिलकर योजना तथा निर्माण' की ओर बढ़ें। विकास-कार्यक्रम के व्यावसायिकों को विकास शिक्षा के सद्धांतों को समझना तथा प्रयोग में अवश्य लाना चाहिए।

कार्यक्षेत्र

विकास-कार्यक्रम तथा मूल्यांकन ऐसे क्रियाकलाप हैं जो व्यष्टि तथा समष्टि दोनों ही स्तरों पर ज़बरदस्त प्रभाव डालते हैं। व्यष्टि स्तर पर कार्यक्रम विकास तथा मूल्यांकन से (*पी.डी.एंड ई.*) कार्यक्रमों की प्रभावशीलता तथा क्षमता को बढ़ाने में सहायता मिलती है तथा इनसे हिताधिकारियों को कार्यक्रमों से लाभ पहुँचाने में मदद मिलती है। समष्टि स्तर पर कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में बुनियादी स्तर की वास्तविकताओं के लिए अमूल्य अंतर्दृष्टि तथा प्रबंधन संभार-तंत्र के द्वारा सूचना उपलब्ध होती हैं। इससे वर्तमान नीतियों को बदलने तथा भविष्य की नीतियों को, जो बुनियादी वास्तविकताओं के लिए अधिक अनुक्रियात्मक हैं, आकार देने में सहायता मिल सकती है।

भारत सरकार ने अनेक कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं, जो जनता के विभिन्न वर्गों तक पहुँचकर विशेष रूप से ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में अभावग्रस्त तथा हाशिए पर बैठे समूहों के शारीरिक स्वास्थ्य तथा जीवन की गुणवत्ता को सुधारने के लिए सहायता प्रदान कर रहे हैं। कार्यक्रमों का केंद्र बिंदु पोषण, स्वास्थ्य, जेंडर, जनसंख्या तथा जनन स्वास्थ्य, कृषि, पशुधन, वनविज्ञान, पर्यावरण, साक्षरता, आय उत्पादन, संधारणीय जीविका तथा अन्य मूलभूत क्षेत्र हैं। इन पहलुओं की जानकारी से आपको इस क्षेत्र में रोज़गार के अवसर को समझने में सहायता होगी।

भारत सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित कुछ मुख्य कार्यक्रम हैं—महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (*एम.एन.आर.ई.जी.ए.*), समाकलित बाल विकास योजना (*आई.सी.डी.एस.*) जो बच्चे तथा माँ की मृत्यु दर को कम करने का प्रयास करती है, मध्याह्न भोजन (मिड-डे-मील) कार्यक्रम, सार्विक प्रारंभिक शिक्षा का सार्विकीकरण (यू.ई.ई.) को प्राप्त करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान (*एस. एस.ए.*), ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को उच्च कोटि की स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (*एन.एच.एम.*), शहरी क्षेत्रों के विकास के लिए जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीकरण मिशन

© NCERT not to be republished

(*जे.एन.यू.आर.एम.*), राजीव गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण पेय जल कार्यक्रम (*एन.आर.डी.डब्ल्यू.पी.*)। राष्ट्रीय ग्रामीण लाइवलीहुड मिशन (एन.आर.एल.एम.) के कार्यक्रम के अंतर्गत ग्रामीण विकास मंत्रालय ग्रामीण महिलाओं को स्व-सहायक बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और स्व-रोज़गार गतिविधियों को शुरू करने के लिए ऋण दिया जाता है।

प्रमुख शब्द

विकास-कार्यक्रम, व्यक्तियों की सहभागिता, पणधारी, आवश्यकताओं का निर्धारण/स्थितिपरक विश्लेषण, कार्य-योजना, कार्यान्वयन योजना, मूल्यांकन संकेतक

पुनरवलोकन प्रश्न

1. विकास-कार्यक्रम की संकल्पना की व्याख्या कीजिए।
2. सतत विकास लक्ष्यों के नाम बताइए।
3. कार्यक्रमों में पणधारियों की भागीदारी क्यों आवश्यक है?
4. विकास-कार्यक्रम चक्र का वर्णन कीजिए।

© NCERT not to be republished